शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्यक जीवन की शिक्षा और संस्कृति संरक्षण

डॉ अमिता जैन
सहायक आचार्य
शिक्षा विभाग
जैन विश्व भारती संस्थान
लाडनूं, नागौर, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

विज्ञान, तकनीक एवं संचार के इस युग में संस्कार संस्कृति में तेजी से परिवर्तन हो रहा है। हमारी संस्कृति चार पुरूषार्थ, चार आश्रम, चार वर्ण व्यवस्था अहिंसा, सत्य, त्याग, तपस्या की रही है, लेकिन वर्तमान संस्कृति में उपभोग, मुक्त मार्केट फैशन परस्ती, मोबाइल संस्कृति का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है। सम्यक जीवन की शिक्षा से इस अपसंस्कृति पर रोक लगाई जा सकती है।

प्रस्तावना

आज की शिक्षा में संस्कार दिया जाना आवश्यक है। बिना संस्कार के शिक्षा अर्थहीन होगी। भारतीय संस्कृति में जन्म से लेकर मृत्यु तक सोलह संस्कारों की जरूरत बताई गयी है, पर जीवन निर्माण हेतु सात संस्कार की शिक्षा देना आवश्यक है - स्वच्छता, सम्मान, सहनशीलता, सहयोग, श्रम, स्वाध्याय व साधना का संस्कार। शिक्षा प्राप्त नहीं करने पर स्वयं को हानि पहुंचती है, लेकिन अच्छे संस्कार नहीं मिलने पर सम्पूर्ण कुटुम्ब, समाज, देश को हानि उठानी पड़ती है। आज का वातावरण संस्कारहीन होता जा रहा है। सिनेमा, टी.वी., इंटरनेट व फेसबुक जैसे माध्यमों से आज के विद्यार्थी गलत दिशा में जा रहे है। विद्यालय, परिवार, समाज और देश के विकृतियों से भरे चेहरों से सिहरन होने लगती है। संस्कारहीन वातावरण कुछ कारणों की वजह से उभरकर हमारे समक्ष उपस्थित हो रहा है। आध्यात्मिक परिवेश का अभाव, महापुरूषों के सम्पर्क का अभाव, कहानियों द्वारा दिये जाने वाले संस्कारों का लोप, अश्लील साहित्य के प्रति अभिरूचि, श्रेष्ठ साहित्य का अभाव, संस्कार निर्माण में अभिभावक व शिक्षक की भूमिका का गौण होना, उत्तेजित करने वाले श्रव्य व दृश्य साधन की प्रचुरता आदि के कारण बालकों में संस्कारहीनता विकसित हो रही है। जिससे संस्कृति में बदलाव सा दिखाई दे रहा है।

मुक्त मार्केट की संस्कृति

विज्ञान, तकनीक व संचार के इस युग में मुक्त मार्केट की संस्कृति तेजी से प्रचलन में आ रही है। हर वस्तु ऑनलाईन के माध्यम से व्यक्ति के घर पहुंचाने की सुविधा प्रदान की जा रही है। इससे छोटे उद्योगों की संस्कृति बन्द होने की कगार पर है। भौतिकता व विज्ञान के इस युग में इस संस्कृति में बहुराष्ट्रीय कम्पनियां अपना जाल बिछा रही हैं। गरीब, निर्धन, असहाय, मजदूर का जीवन दूभर हो गया है। सस्ते दामों में वस्तुएं उपलब्ध होने से व्यक्ति आवश्यकता

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

से अधिक संग्रह कर रहा है। अधिकतम धन खर्च की संस्कृति बढ़ रही है।

शिक्षा में उपभोग की संस्कृति का बढ़ना

आज शिक्षा में उपभेग की संस्कृति का चलन तेजी से बढ़ा है। ज्ञान, मूल्य व संस्कार देने की संस्कृति कम हो रही है। शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थान शिक्षकों को कम वेतन देकर अधिक से अधिक धन बटोरने का प्रयास कर रहे हैं। उपभोग की संस्कृति ने शिक्षा को नीरस, निष्क्रिय, निर्जीव बना दिया है। परिणामस्वरूप कुसंस्कार, कुप्रवृत्तियां और कुविचार अधिक हावी हैं। शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों के व्यवहार में यह प्रवृत्ति अधिक दृष्टिगोचर हो रही है। सही ज्ञान, सही विचार व सही सोच शिक्षा के क्रियाकलापों में अवलोकित नहीं हो रहे हैं।

फैशन परस्ती की संस्कृति का प्रचलन

भौतिकवादी प्रवृत्ति से ग्रस्त होकर मनुष्य सब कुछ भोगने की चाह में लगा हुआ है। काम वासना की तरफ उसका आकर्षण तेजी से बढ़ा है। जिसकी वजह से हर क्षेत्र में हर वर्ग का युवा वर्ग फैशन परस्ती में संलिप्त है। ऐसा प्रतीत होता है कि युवा वर्ग ही नहीं प्रौढ़ वर्ग भी फैशन परस्ती की चपेट में आ चुका है। काम वासना को जाग्रत करने वाले वस्त्र को पहनना, शरीर प्रदर्शन करना, सौन्दर्य प्रसाधनों का दिनभर उपभोग करना, शरीर को प्रसाधनों से आकर्षक बनाने का प्रयास करना, तड़क-भड़क के वस्त्रों को पहनना आज आम बात हो गयी है। फैशन के मोह में अपनी संस्कृति दूषित दिखाई देने लगी है। इस भोग वृत्ति संस्कृति ने घरों में वस्त्रों का ढेर लगा दिया है। घर में चारों तरफ वस्त्र, जूते चप्पल व प्रसाधन की सामग्री ही दिखाई देती है। सबसे अधिक धन राशि फैशन पर ही खर्च हो रही है। इस भौतिकवादी प्रवृति के जाल से छुड़ाने में अध्यात्म कारगर हथियार है। प्रौढ़ और युवाओं को आध्यात्मिक प्रवृति की ओर मोड़ने की जरूरत है।

मोबाईल संस्कृति का प्रचलन

आज मोबाइल जीवन का महत्वपूर्ण भाग बन गया है। जाने-अनजाने, चाहे-अनचाहे हम मोबाइल के गुलाम हो गए हैं। हर कोई मोबाइल पर व्यस्त है। इस अनावश्यक व्यस्तता ने जीवन से अनुभूतियों और संवेदनाओं को बेदखल कर दिया है।

वर्क फ्रॉम होम संस्कृति

आजकल घर पर कार्य करने की संस्कृति का प्रचलन तेजी से बढ़ा है। इससे संस्थान, कार्यालय, ऑफिस में स्थान की समस्या, पार्किंग की समस्या, आने-जाने की समस्या अनर्गल खर्चे, पेट्रोल पार्किंग आदि की बचत आदि से मुक्त तो हुए हैं, लेकिन सामूहिक संस्कृति, परस्पर सहयोग, अनुशासन, मूल्य, व्यवहार, चाल-चलन आदि का अभाव परिलक्षित हो रहा है। ऑनलाईन शिक्षा की संस्कृति का प्रचलन भी बढ़ा है। इसके खतरे दिखाई देने लगे हैं। विद्यार्थी ऑनलाइन क्लास के गेम खेलने में व्यस्त हैं। इसका स्वास्थ पर भी विपरीत असर हो रहा है।

निष्कर्ष

वर्तमान शिक्षा में संस्कारों को दिया जाना आवश्यक है। बिना संस्कारों के हमारी शिक्षा की पहचान समाप्त हो जायेगी। अच्छे संस्कारों के अभाव में समाज की स्थिति दयनीय हो जायेगी। आज का वातावरण शिक्षा को संस्कारहीन वातावरण में ढकेल रहा है, जिसे शिक्षाविदों, विद्वानों व मनीषियों के द्वारा रोका जाना चाहिए। विज्ञान युग में विज्ञानसम्मत संस्कार को

अपनाने की आवश्यकता है। प्राचीनता और नवीनता में संतुलन से भावी पीढी की रचना हो सकती है। जीवन के हरेक क्षेत्र में सम्यक सिद्धांत को अपना लेने से आज दिखाई दे रही समस्याओं का समाधान हो सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 कोठारी गुलाब (2016), मानस : शिक्षा और संस्कार, पत्रिका प्रकाशन, जयपुर

2 कोठारी गुलाब (2016) मानस : संस्कृति और सभ्यता, पत्रिका प्रकाशन, जयपुर

3 कोठारी गुलाब (2015) मानस : व्यक्ति और समाज, पत्रिका प्रकाशन, जयपुर

4 अरुण कुमार (2010) मनोविज्ञान के संप्रदाय एवं इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलुरु रोड दिल्ली